Notification No. 564/2024

Date of Award : 12-08-2024

Name of Scholar : Wahida Parveez

Name of Supervisor : Prof. Kahkashan Ahsan Saad

Name of Co-Supervisor : Prof. Indu Virendra, Dr. Asif Umar

Name of Department : HINDI, JMI

Topic of Research : Hindi Katha Sahitya Mein Purvottar ke Asmita Sangharsh ka Aalochanatmak Adhyayan

Findings

बीसवीं सदी के अंतिम दशक में हिन्दी में अस्मितावादी साहित्य और आलोचना का विकास नये रूप में होता है और यह नया रूप स्त्री, आदिवासी और दलित साहित्य के रूप में सामने आया। इस सदी में समाज के वंचित समूहों ने अपने हक़, अधिकार और अपनी अस्मितागत पहचान के लिए साहित्य के माध्यम से आवाज़ उठाया। हिन्दी साहित्य में दलित, नारी और आदिवासी के अलावा भी समाज के सभी वंचित वर्गों ने कहानी, कविता, उपन्यास, आत्मकथा और अन्य विधाओं के माध्यम से साहित्य जगत में अपनी अस्मिता की बात रखी। इन विमर्शों में शोषित समाज के हक़ के लिए लेखन कार्य किया जा रहा है। किसी व्यक्ति के होने के अहसास को अस्तित्व कहा जाए तो उसके किसी खास समुदाय, भाषा, संस्कृति, परंपरा, देश या राज्य के होने को अस्मिता कहा जाता है।

पूर्वोत्तर में औरतों की बेहतर भागीदारी का कारण यहाँ का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश है। 'रुपतिल्ली की कथा' में देख सकते है कि पूर्वोत्तर की मातृवंशीय समाज में औरतों की गतिशीलता और दृश्यता देश के अन्य समाज की महिलाओं से बेहतर है। उदाहरण के तौर पर यहाँ के आदिवासी समाज में दहेज-प्रथा और पर्दा-प्रथा जैसी रूढ़ियों का प्रचलन नहीं है। अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान ज़बरदस्त है।

अस्मिता विमर्श एक तरह से साहित्य में बहुत नया विमर्श है परंतु इसका अस्तित्व पुराना है। पूर्वोत्तर पर केंद्रित हिन्दी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से आज़ादी के पहले से लेकर बाद के अस्त-व्यस्त राजनीतिक परिस्थिति का जायज़ा ले सकते है। पूर्वोत्तर क्षेत्र की प्रमुख लोकप्रिय छवियों में वहाँ की 'अनगिनत विद्रोह' की छवि एक है। पूर्वोत्तर में आज़ादी के बाद की पूरी राजनीति ही अस्मिता पर टिकी हुई है चाहे वह असम के 'बहिरागत' की समस्या हो, चाहे मणिपुर में नागा-कुकी-मैतई संघर्ष हो, चाहे त्रिपुरा की जनजाति का अल्पसंख्यक में परिणत होने का प्रश्न हो या मिज़ोरम के लोगों के प्रति सरकार की अवहेलना का प्रतिरोधी विद्रोह हो, हर कोई अपनी अस्मिता के रक्षा के लिए तत्पर है।

प्राकृतिक आपदाएं किस प्रकार से अस्मिता का संकट बन जाती है यह हम 'नदी की टूट रही देह की आवाज़' और 'जहां बांस फूलते हैं' उपन्यास में देख सकते हैं। मिज़ोरम में कई दशक तक संघर्ष चला, सरकार द्वारा देश की रक्षा में अपने ही देश के लोगों पर हमला करवाया गया। यह पूरा आंदोलन ही अपनी अस्मिता को बचाने के लिए लड़ा जा रहा था। वहीं असम की नागारिकता की समस्या राष्ट्रीय समस्या बन कर उभरी है जिसके पीछे का एक मुख्य कारण बाढ़ से होने वाला विस्थापन है। आज असम के लाखों लोग अपनी पहचान के लिए भटक रहे हैं और डिटेन्शन कैम्प में जीवन बिता रहे हैं।

असम में विभिन्न समुदायों के प्रवास का एक विस्तृत इतिहास है। अंग्रेजों ने अपने फ़ायदे के लिए बंगाली हिंदू और मुस्लिम लोगों को असम प्रवास के लिए प्रेरित किया था। खेती के लिए भूमि तो उन्हें मिल गयी थी परंतु उन्हें ब्रह्मपुत्र घाटी में और 'चर' इलाक़े में बसाया गया था जो ज़मीन कटाव के कारण असुरक्षित थी। असम में सिर्फ़ पूर्वी बंगाल के लोग ही आकर नहीं बसे हुए थे बल्कि नेपाल, भूटान, भारत के बाक़ी राज्यों जैसे बिहारी, माड़वाड़ी, संथाल, मुंडा, उराउं, गोंद, भूमिज आदि लोग भी समय-समय यहाँ आकर बसे। अलग-अलग राजनीतिक पार्टियाँ, संगठन द्वारा बाहरी होने की अलग-अलग परिभाषा दिया जाता है। वर्तमान समय में 'स्थानीय' और 'बाहरी' का संघर्ष असम एवं पूर्वोत्तर के मुख्य राजनीतिक मुद्दा के रूप में सामने आ रहा है।

पूर्वोत्तर का खान-पान और वेश-भूषा अपने आप में एक विशाल विषय है। अलग खान-पान होने के कारण शेष भारत में कई बार पूर्वोत्तर के बारे में पूर्वाग्रही विचार और व्यवहार व्यक्त होते हुए देखा जा सकता है। परंतु किसी भी जगह के खान-पान को समझने के लिए हमें उस जगह के भौगोलिक स्थिति को समझने की आवश्यकता है। आज पूर्वोत्तर में कई अल्पसंख्यक भाषाएँ एवं संस्कृतियाँ संकटग्रस्थ हैं। पूर्वोत्तर के लोग अपनी इस पहचान को लेकर सतर्क है और उन्हें अपनी अस्मिता से लगाव भी है इसलिए वे हमेशा अपने समुदाय में ही रहना पसंद करते है। अतः भाषा इसमें सबसे पहली और महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा को लेकर लम्बे समय से असम में राजनीति हो रही है। कभी बांग्ला भाषा के सामने असमिया भाषा को उपेक्षित किया गया था और आज असम में अल्पसंख्यक भाषाओं की अस्मिता संकटग्रस्त है।